तीर्थयात्रा

प्रकाशन तिथि: 1 अगस्त 2026

अंश: बोधगया, राजगीर, नालंदा, सारनाथ — युवा भिक्षु उन स्थानों की यात्रा करते हैं जिनके बारे में वे पढ़ते आए हैं, और उन्हें सचमुच के खेत, सचमुच की पहाड़ियाँ, सचमुच की ईंटें पाते हैं।

Tags: DAILY RHYTHMS MONASTERY

मूल लेख यहाँ पढ़ें: https://dzongplum.netlify.app/hi/jeevant-vihar/dainik-charya/04-the-pilgrimage

वे पीली डोरियों में नाम-पट्टिकाएँ पहनकर निकले — कोई विहार जब बहुत सारे बच्चों को घर से बहुत दूर ले जाता है, तो यही करता है।

कई सप्ताह तक ज़ोंगकर छोएदे के युवा भिक्षु वही करते रहे थे जो वे सदा करते हैं: कक्षाएँ, प्रार्थनाएँ, विहार की सामान्य लय। फिर वे एक बस में सवार हुए, और जिन स्थानों के बारे में वे पढ़ना सीखने के दिन से पढ़ते आ रहे थे, वे एक के बाद एक सामने

आने लगे।

बोधगया में वे महाबोधि मंदिर तक गए, जहाँ परंपरा के अनुसार ढाई हज़ार वर्ष से भी पहले बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध को संबोधि प्राप्त हुई थी। वहाँ प्रार्थनाएँ हुईं और परिक्रमा, और प्रतीक्षा के दौरान दोनों हाथों में सँभालकर रखे गए पुष्प अर्पण। ऊपर हर रंग की प्रार्थना-ध्वजाएँ थीं, और गर्मी में बहुत देर तक खड़े रहना भी।

राजगीर में उन्होंने गृध्रकूट, गिद्ध-शिखर, की चढ़ाई की, सूखी पहाड़ियों के बीच पक्के रास्ते से, आगे-आगे एक बौद्ध ध्वज लिए। शिखर पर प्रार्थनाएँ हुईं, एक पताका लगी, और यह पता चला कि चोटी पर बैठने को अधिकतर गर्म चट्टान ही है। उन्होंने नालंदा के खंडहर देखे, जहाँ सात सौ वर्षों तक भिक्षु अध्ययन करते रहे।

सारनाथ में, जहाँ बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, वे भोर में उद्यानों में टहले जब घास पर अभी कुहासा था, और चौखंडी स्तूप के नीचे एकत्र हुए — ईंटों का एक विशाल सीढ़ीदार टीला, जिसका चित्र लेने के लिए काफ़ी पीछे हटना पड़ता है।

इन सबके बीच यात्रा स्वयं भी थी, जो इस कहानी का अपना एक हिस्सा है। क़तार में चलते रिक्शे, हर बेंच पर तीन भिक्षु। बस के लिए एक पंक्ति। दोपहर में किसी का रेलिंग के सहारे सो जाना। सड़क किनारे किसी पड़ाव पर मिले नाश्ते, और उनकी रक्षा।

जिस बच्चे ने वर्षों तक प्रार्थनाओं में इन स्थानों के नाम दोहराए हों, उसके लिए वहाँ पहुँचना एक विशेष प्रकार का विस्मय है। वे स्थान सचमुच के निकलते हैं: सचमुच के खेत, सचमुच की पहाड़ियाँ, सचमुच की ईंटें, पैरों तले गर्म। जो अब तक एक कथा थी, वह ऐसी जगह बन जाती है जहाँ आप हो आए हैं।

तीर्थयात्रा एक आध्यात्मिक यात्रा है। युवा भिक्षुओं के लिए वह अपने मित्रों के साथ घर से बहुत दूर की यात्रा भी है, और दोनों बातें एक साथ सच हैं।

चित्रशाला

चौखंडी स्तूप, सारनाथ में।

भोर में सारनाथ के एक विहार-प्रांगण से गुज़रते हुए।

बोधगया में प्रार्थना-ध्वजाओं के नीचे।

पुष्प अर्पण लिए प्रतीक्षा करते हुए।

रिक्शे से एक स्थान से दूसरे स्थान तक।

सारनाथ के उद्यानों में टहलते हुए।